दिनांक 15 दिसम्बर 2016 को लोक सभा सचिवालय द्वारा श्रद्धेय चन्द्रशेखर जी एवं जगन्नाथ राव जोशी की स्मृति में प्रकाशित पुस्तक के विमोचन के अवसर पर माननीय लोक सभा अध्यक्ष का भाषण।

1. श्री जगन्नाथ राव जोशी जी एक सरल, समर्पित, निष्काम कर्मयोगी थे। ऐसा व्यक्तित्व सदियों में पैदा होता है। आज हम जगन्नाथ राव जोशी जी की बात कर रहे हैं तो मुझे सन् 1967 के वक्त संसद में कही उनकी बातें याद आ रही हैं। आज से 50 साल पहले कोई आदमी इतनी आगे की कैसे सोच सकता था जो आज भी उतनी ही प्रासंगिक हो? उनके द्वारा तब उठाए गए विषय आज भी तथ्यपरक हैं। जब उन्होंने बाढ़ और Interlinking of rivers की बात की थी। शिक्षा के साथ–साथ Infrastructure development पर बल दिया था। Food Security के साथ–साथ महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बात की थी। दलितों, श्रमिकों, आदिवासियों और मजदूरों के सशक्तिकरण के लिए बात की थी। दलितों, श्रमिकों, आदिवासियों और मजदूरों के कल्याण के लिए उनके अपने विचार थे। वे निरन्तर इनके हितों के विषय में सोचते रहे। वे कर्नाटक से आते थे तथा हिन्दी, मराठी, कन्नड़ और अंग्रेजी भाषा पर उनकी समान पकड़ थी, परंतु वे हमेशा हिन्दी में ही अपनी बात रखते थे।

2. संसद की यह इमारत प्रख्यात एवं सम्मानित व्यक्तियों के उद्‌गारों को सुनने की साक्षी बनी है। जगन्नाथ राव जोशी जी का भी नाम उन सम्मानित व्यक्तियों में लिया जाता है जिनकी भाषण कला एवं कौशल सर्वश्रेष्ठ थी।

3. कर्नाटक केसरी जगन्नाथ राव जोशी जी के दीर्घ एवं परोपकारी जीवन चक्र का आरंभ 23 जून 1920 से शुरू हुआ, जो 15 जुलाई 1991 तक अनवरत चलता

रहा। अपनी समाजसेविता के लिए वे जाने जाते रहे। इस बात का अंदाजा आप स्वयं लगाईए कि उनकी अंतिम यात्रा का नेतृत्व स्वयं आदरणीय अटल बिहारी जी वाजपेयी कर रहे थे। शेषाद्रि जी भी उसमें शामिल थे।

4. जोशी जी 22 वर्ष की उम्र में ही पुणे में सरकारी नौकरी में आए। 25वें साल में ही उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़ दी और तब से लेकर अपने जीवन के अंतिम क्षण तक समाज के कल्याण से ही जुड़े रहे। **संघ, जनसंघ और जगन्नाथ राव जोशी!** देशभक्ति की धुन उनकी पहचान थी। वे समूचे भारत को एक आत्मा मानते थे। उस समय गोवा मुक्ति आंदोलन चल रहा था। उन्होंने गोवा मुक्ति के इस पुनीत बलिवेदी में अपना श्रम लगाया। मात्र 35 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया।

5. गोवा मुक्ति आन्दोलन के दौरान जेल गए एवं उन्होंने लोगों की समस्याओं से मुक्ति के लिए निरंतर संघर्ष किया। गोवा मुक्ति आन्दोलन के लिए उन्होंने देशभर में अभियान चलाया और हजारों लोगों को लेकर गोवा की ओर चल पड़े। जैसे श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी को कश्मीर में बिना परमिट के ही प्रवेश करने के आरोप में गिरफ्तार किया था, उसी प्रकार उन्हें भी गोवा में गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया। **जब उनसे जज ने पूछा कि आप गोवा में बिना परमिट के क्यों आए। तो उन्होंने तुरंत उलट प्रश्न किया कि आप गोवा में क्यों आए हो? गोवा तो हमारी मातृभूमि है। जोशी जी का सदैव यही मानना था कि** ''गोवा भारत से अलग नहीं है, यह भारत का अभिन्न अंग है।''

6. जैसा कि विष्णु पुराण में वर्णित हैः– उत्तरं यत् समुद्रस्य, हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वर्षतद् भारतन्नाम भारती यत्र संतति।'' (यानी कि हिमालय के दक्षिण

का सारा हिस्सा और समुद्र के उत्तर का सारा हिस्सा, समग्र जाति, पाति, पंथ, संप्रदाय, रहन–सहन के भेद के साथ हम एक देश, एक राष्ट्र, एक शरीर में आत्मा के रूप में रहे हैं, हजारों–हजारों सालों से हैं।

7. जब मैं इस पुस्तक के पन्ने पलटती हूं तो मुझे लगता है कि भारतीय राजनीति का एक इतिहास मेरी नज़रों के सामने से गुजर रहा है। बलराज मधोक, दीनदयाल उपाध्याय, अटल बिहारी जी वाजपेयी, केदार नाथ साहनी, सुंदर सिंह भंडारी, सिकन्दर बख्त इनके नाम बरबस याद आते हैं।

8. जगन्नाथ राव जोशी कर्नाटक के थे और मध्यप्रदेश के शाजापुर और भोपाल से लोक सभा का चुनाव जीते। उनकी पहचान, सोच और प्राथमिकता राष्ट्र ही थी। वे कहीं से भी चुनाव जीतने का सामर्थ्य रखते हैं। वे देश भर में घूमे एवं उन्होंने संगठन में काफी काम किया। हजारों कार्यकर्ताओं से मिले एवं उन्हें पूरे देश में हर जगह अपनापन मिला। **ऐसा व्यक्तित्व ही राजनीति में लोकप्रिय होता है जिनमें समाजसेवा की लगन हो एवं सबको साथ लेकर चलने की काबिलियत हो। ठीक वैसी ही छवि जगन्नाथ जी की थी।**

9. जोशी जी के बारे में यह कहना बहुत सार्थक हैः–

''शांतो महन्तो निवसन्ति सन्तः

वसंतावत् लोकहितम् चरतम्।''

(जिसका अर्थ यह है कि Great are the people who are calm and sublime like the spring season, they always aid in the betterment of world, without any expectation.)

10. संसद की बात हो, तो एक सांसद के तौर पर भी जोशी जी एक अनुकरणीय नाम है। संसद में अपनी बात रखने के लिए संसद में उपलब्ध प्रक्रियाओं का उन्होंने सदुपयोग किया। सदन की dignity and decorum की उन्होंने सदैव वकालत की, उनको सर्वोच्च प्राथमिकता दी और अक्षरशः उनका पालन किया। उनका विश्वास था कि सदस्यों का कार्य ऐसा होना चाहिए कि उसमें संसद की मर्यादा और शालीनता बढ़े। सरकार की कमियां गिनाते समय, कमजोरियां बताते समय वे बेहद संयत बने रहते थे। ऐसे व्यक्तित्व के ऊपर पुस्तक को पढ़कर उनके जीवन के बारे में और गहराई से जानने का अवसर मिलेगा।

11. लगभग 300 पृष्ठों की यह सचित्र पुस्तक उनके संसदीय कार्य का एक दर्पण है। इस पुस्तक के प्रारंभ में मैंने प्राक्कथन भी लिखा है। उसमें मैंने कहा है कि श्री जोशी जी एक बहुआयामी सांसद थे जो राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर गहरी पैठ रखते थे। इस पुस्तक में विभिन्न विषयों पर श्री जोशी जी के चुनिन्दा भाषणों और वक्तृत्व का संकलन किया गया है। उन्होंने संसद में होने वाली लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों पर अपनी बात मजबूती से रखी।

12. इस पुस्तक में एक जगह जोशी जी के एक वक्तव्य का उल्लेख है। उन्होंने कहा कि भगवान सब तरफ हैं, हर एक के दिल में है। इस बात को लेकर अगर हम चलते हैं तो झगड़े की कोई गुंजाइश बाकी नहीं रह जाती है। हम एक हैं बाहर से और अन्दर से भी। हमारे देश की तो यह महत्ता है कि इस देश के अन्दर कई भाषाएं चलती हैं। तुंचत्तु एड़त्तन ने मलयालम में अपनी रचनायें लिखीं, तुलसीदास ने अवधी में, त्यागराज ने तेलुगू में। हमारा कम्ब तमिल में लिखेगा, थिरूवल्लार तमिल में लिखेगा। भाषा का सवाल नहीं आता है। भाषा के पीछे ''चतुर्विध पुरूषार्थ धर्म अर्थ काम मोक्ष '' की ही कल्पना आती है, दूसरे पंथों में नाम चाहे अलग हों। इसी कारण हिन्दुस्तान में आपको रामायण की कई प्रतियां मिलेंगी। झगड़ा इस पर नहीं हो सकता है, क्योंकि लिखने वाले द्वैत के पीछे पीछे हुए अद्वैत के आधार पर यह देश खड़ा है।

13. अर्थोपार्जन के विषय में उनका मत बहुत उत्कृष्ट था। उनका मानना था कि 'कराग्रे वसते लक्ष्मी'। घोड़े पर पैसा लगा कर लक्ष्मी पैदा नहीं होती, पसीने से पैदा होती है, परिश्रम से पैदा होती है। इसीलिये कहा गया कराग्रे वसते लक्ष्मी। यह नहीं कहा कि धनी आदमी के यहां लक्ष्मी होती है। परिश्रम करके और पसीने से लक्ष्मी प्राप्त की जा सकती है।

14. औद्योगिक और श्रम संबंधी नीतियों पर 7 अप्रैल 1972 में लोकसभा में दिया गया उनका भाषण, जो मजदूरों के प्रति न्याय की बात करता है, उल्लेखनीय हैः–

''जितने भी सार्वजनिक उद्योग स्थापित होते हैं, उनकी ईंट पर ईंट खड़ा करने वाला सामान्य मजदूर होता है, लेकिन वह कभी ईंट के घर में नहीं रहता है, वह झोपड़ी में रहता है। उसको आपको सम्मान देना होगा, उसके श्रम को

आपको मान्यता प्रदान करनी होगी। जब **Dignity of Labour** स्थापित होगी, तभी समाजवाद एवं सामाजिक न्याय का नारा बुलन्द हो सकेगा।'' ये वाक्य वास्तव में प्रेरित करते हैं और मजदूरों के बारे में सोचने पर मजबूर करते हैं।

।।.

15. आज ही जोशी जी की पुस्तक के साथ एक और महान राजनीतिक एवं समाजवादी व्यक्तित्व पर पुस्तक का विमोचन हुआ है। इस महान हस्ती का नाम है चन्द्रशेखर। मृदुभाषी, दृढ़संकल्पी, प्रखर वक्ता, लोकप्रिय समाजवादी, राजनेता, विद्वान लेखक एवं बेबाक समीक्षक के गुण एक ही व्यक्ति में समाहित। चंद्रशेखर जी की पुस्तक का नाम ''संसद में चंद्रशेखर'' है। बलिया के इस किसान नेता की पहचान कमजोर व्यक्ति की बुलंद आवाज के तौर पर होती है। दूसरों के विचारों को सुनना चंद्रशेखर जी की सबसे बड़ी विशेषता थी।

16. उन्होंने पहली बार संसद में सन् 1962 में कदम रखा। तत्पश्चात्, वे आठ बार लोक सभा के सदस्य बने और तीन बार राज्य सभा के सदस्य बने। उनकी जिंदगी ही संसद रही। वे प्रधानमंत्री भी बने, खास बात यह रही कि वे सीधे एमपी से पीएम बने।

17. जिसका संसदीय कार्यकाल इतना दीर्घ हो, जो व्यक्ति देश की रग रग को पहचानता हो जिसका आमजन से सरोकार हो तो उसके भाषणों में भी आप सम्पूर्ण भारत की खुशबू महसूस कर सकते हैं। **चंद्रशेखर जी ने देशाटन किया।**

1983 में कन्याकुमारी से राजघाट तक 4260 कि.मी. पदयात्रा की। लोगों की समस्याओं को देखा, सुना, समझा और यथासंभव हमेशा उनको दूर करने का प्रयत्न किया।

18. चंद्रशेखर जी की इस पुस्तक में 26 लोगों ने उनके बारे में उनके व्यक्तित्व के बारे में लेख के माध्यम से विचार रखे हैं एवं उनका चरित्र चित्रण किया है। वे वास्तव में एक अनूठे राजनेता थे जिन्हें पक्ष एवं प्रतिपक्ष दोनों समान भाव से सम्मान देता था। उनकी बातों को सदैव गंभीरता से लिया जाता था।

19. बैंकों के राष्ट्रीयकरण से लेकर सरकारी उपक्रमों की स्थापना, देश में कानून और व्यवस्था की स्थिति, कर्मचारियों, किसानों, श्रमिकों के बारे में उनके विचार, कृषि पर इनकी पकड़, विदेशी मामलों में देश का पक्ष और पंचवर्षीय योजनाओं में इनकी रूचि इनके भाषणों के शब्दों में हमेशा झलकती रही।

20. 1995 में उत्कृष्ट सांसद के पुरस्कार से सम्मानित चंद्रशेखर जीवन भर युवा तुर्क बने रहे। विरोध और विद्रोह उनके जीवन का हिस्सा रहा, लेकिन वह सदैव सार्थक एवं रचनात्मक रहा।

21. 2007 में इनका निधन दिल्ली में हुआ। इस प्रख्यात समाजवादी विचारक के विचारों में सहिष्णुता, सर्वधर्म सम्मान, समाजवादी चिन्तन स्पष्ट झलकता था। उनकी पुस्तक ''मेरी जेल डायरी'' और ''डायनामिक्स ऑफ सोशल चेन्ज'' उनके उत्तेजक विचारों की सारथी है।

22. जो व्यक्ति राजनीति में सही ढंग से सोचते हैं उनकी प्राथमिकताएं नहीं बदलतीं। अपने मानवीय दृष्टिकोण और एक सुधारक के उत्साह का समावेश उनमें अपनी अलग विचार शैली होने के बावजूद सच्चे लोकतंत्रवादी की तरह उन्होंने अपना जीवन जिया और अपने व्यावहारिक स्वभाव एवं यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण ही वे लोगों के प्रिय नेता बने। आज हम सभी उनके विचारों को याद कर रहे हैं एवं उनके सुझावों पर अमल भी कर रहे हैं क्योंकि वे समय से काफी आगे थे।

23. ये दोनों राजनेता अपनी कर्मनिष्ठा, मनोयोग एवं विद्वता के लिए जाने जाते हैं। उनकी याद में लोक सभा सचिवालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें पाठकों को उनके आदर्शों के प्रति निरंतर प्रेरित करती रहेगी एवं देश के नवनिर्माण में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि विचार ही नवदृष्टि एवं नवीन पथ का मार्ग प्रशस्त करता है।

———